www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महामानवों का सत्संग - प्रति क्षण स्वाध्याय के माध्यम से.

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मासाङ्क-१८१

लेखक

श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक

युग निर्माण योजना,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

१९८१

मूल्य-

पच्चीस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महामानवों का सत्संग-प्रतिक्षण, स्वाध्याय के माध्यम से

शास्त्रों में सत्संग की असाधारण महिमा गाई गई हैतथा उससे प्राप्त होने वाले अनेकों प्रकार के लाभों की चर्चा की गई है। यह वर्णन अकारण नहीं है। कभी इस देश में व्यक्तित्व सम्पन्न देव पुरुषों की ऐसी टोली रहती थी जिसकी निकटता से मिलने वाले वैचारिक अनुदानों, प्रेरणा और प्रकाश से कितने ही व्यक्ति अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन की अनेकानेक गुत्थियों का समाधान प्राप्त करते थे। उस दृष्टि से ऐसे महापुरुषों, सन्तों, महा-मानवों का सानिध्य आवश्यक माना गया था। उनके निकट में पहुँच कर अनेकों व्यक्ति समय-समय पर शान्ति अनुभव करते तथा भावी जीवन के लिए मार्ग दर्शन प्राप्त

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करते थे। सत्संग ऐसे ही महापुरुषों का लाभप्रद सिद्ध होता था।

कालान्तर में ऐसे व्यक्तित्व सम्पन्न, महामानवों, सन्तों का अभाव पड़ गया। इक्के-दुक्के जो हैं भी तो उनके पास इतना समय नहीं है कि हर व्यक्ति को परामर्श दे सकें। यों तो साधू बाबा के नाम पर लाखों व्यक्ति अब भी देश में विद्यमान हैं। उनके सत्संग भी चलते रहते हैं, किन्तु उससे जीवन गुत्थियों का कोई हल निकलता हो ऐसा नहीं देखा जाता। व्यक्तित्व के अभाव में न तो उनके चिन्तन में इतनी प्रखरता होती है कि उत्पन्न समस्याओं का कारण एवं हल ढूँढ सकें और न ही चरित्र की दृढ़ता कि दूसरों के अवांछनीय प्रवाह को श्रेष्ठ दिशा में मोड़ सकें। ऐसी स्थिति में उनके उद्बोधन, प्रवचन, मात्र वाक-विलास बनकर रह जाते और सत्संग का अभीष्ट लाभ नहीं दे पाते।

इन परिस्थितियों में सत्संग का अभीष्ट वैचारिक लाभ प्राप्त करने का एक ही श्रेष्ठ मार्ग अवशेष बचता है—सत्साहित्य का अध्ययन। महापुरुषों की वाणी चाहे वे

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भूतकाल के हों अथवा वर्तमान से, पुस्तकों में सजीव विचारणा के रूप में कैद रहती है जिसका लाभ जब चाहें उठाया जा सकता है। सत्संग के लिए तथाकथित साधु बाबाओं की जमात में, अपने समय श्रम और धन को गँवाया जाय और उनके उल्टे-सीधे उद्‌बोधन द्वारा दिग्-भ्रान्त हुआ जाय; इसकी तुलना में अपनी समस्याओं के हल के लिए सम्बन्धित महापुरुषों द्वारा लिखे साहित्य का अध्ययन श्रेयष्कर है।

मनुष्य के बनने एवं बिगड़ने में विचारों की असा-मान्य भूमिका होती है। हर व्यक्ति में इतनी मौलिक सूझ-बूझ नहीं होती कि संसार के अवांछनीय प्रवाह में दृढ़ रह सके। सद्‌विचारों के अभाव में पतन का मार्ग सरल और आकर्षक लगता है। जबकि श्रेष्ठ विचार ऐसे अवसरों पर मनुष्य की रक्षा करते तथा दीपक की लौ की भाँति मार्गदर्शन करते हैं। विचारों की महिमा का प्रतिपादन सभी महापुरुषों ने किया है।

भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को उपदेश देते हुए बताया--"भिक्षुओ ! वर्तमान में हम जो कुछ हैं अपने

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारों के कारण हैं और भविष्य में जो कुछ बनेंगे वह भी अपने विचारों के कारण !"

शेक्सपीयर ने लिखा है—"कोई वस्तु अच्छी या बुरी नहीं है। अच्छाई या बुराई का आधार हमारे विचार ही हैं।"

ईसा मसीह का कथन है—"मनुष्य के जैसे विचार होते है वैसा ही बन बन जाता हैं।"

प्रसिद्ध रोमन दार्शनिक 'मार्क्स आरीलियम ने लिखा है—'हमारा जीवन जो कुछ भी है, हमारे अपने विचारों का प्रतिफल है।'

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि—'स्वर्ग और नर्क कहीं अन्यत्र नहीं, इनका निवास हमारे विचारों में है।'

स्वामी रामतीर्थ के अनुसार—'मनुष्य के जैसे विचार होते हैं, वैसा ही उसका जीवन बनता है।'

मैस्कल ने एक स्थान पर लिखा है—'संसार की समस्त बुराइयां इस तथ्य से पैदा होती हैं कि मनुष्य एकान्त चिन्तन-मनन का स्वयं को अवसर नहीं देता।'

प्रसिद्ध अमरीका लेखक डेल कानेंगी ने अपने अनुभवों

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के आधार पर कहा है--'जीवन में मैंने कोई महत्वपूर्ण बात सीखी है तो वह है विचारों की अपूर्व शक्ति और महत्ता। विचारों की शक्ति सर्वोच्च तथा अपार है।'

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है ज्ञान के प्रति जिज्ञासा और बुद्धिनिष्ठा। अन्ध श्रद्धा और अन्ध मान्यता के लिए इसमें कोई गुंजायश नहीं। भारतीय संस्कृति के आदि आविष्कर्ताओं ने प्रारम्भ से ही किसी एक तथ्य को महत्व न देकर बुद्धि को ही धर्म-संस्कृति का निर्णायक बनाया। बौद्धिक आधारशिला पर ज्ञान का सर्वाङ्गीण विकास और उसकी शोध यहाँ की प्रमुख विशेषता रही। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता का मूलाधार वेद है। वेद का अर्थ है ज्ञान और ज्ञान-बुद्धि की साधना का परिणाम है। ज्ञान बुद्धि की देन है, अस्तु हमारी समस्त जीवन पद्धति का संचालन बुद्धि द्वारा होता आता है।

कौटिल्य ने कहा है—" जिस मनुष्य की बुद्धि का विकास नही होता अथवा जो बुद्धि द्रोही और अविवेकी होता है, वह मनुष्यता से गिर जाता है।" शास्त्रकारों ने

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुद्धि को सर्वोपरि बताया—'बुद्धियस्य बलतस्य निर्बुद्धिस्य कुतो बलम्' अर्थात् जिसमें बुद्धि है उसी में बल है, बुद्धिहीन के पास बल कहाँ ? 'ज्ञानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यत्'—ज्ञान की तुलना में संसार में और दूसरी सिद्धि नहीं।

वैज्ञानिक प्रगति के इस युग में ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न साधन उपलब्ध हैं। रेडियो, सिनेमा, समाचार-पत्र, टेलीविजन इत्यादि जिसके अन्तर्गत आते हैं। किन्तु सत्साहित्य अध्ययन इन सब साधनों में सबसे प्राचीन और सबसे प्रभावोत्पादक है। स्वाध्याय की प्राचीनकाल से विशेष महत्ता मानी गई है। मनुष्य के दैनिक जीवन क्रम में अनिवार्य कर्त्तव्य के रूप में इसका समावेश किया गया है।

पुस्तक का आविष्कार मनुष्य की सर्वोत्तम सफलता है। अन्य किसी वस्तुमें ऐसा स्थायित्व नहीं जो चिरकाल तक मानवता को लाभान्वित कर सके। बड़े-बड़े भवन धराशायी हो जाते हैं, राष्ट्र नष्ट हो जाते हैं, पुरानी हो जाने पर सभ्यताओं का अन्त हो जाता है और अन्धकार के एक युग के बाद पुराने खण्डहरों पर नई सभ्यताएँ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खड़ी हो जाती हैं। किन्तु साहित्य के संसार में बड़े-बड़े ग्रन्थ जीवित रहते हैं। वे बार-बार प्रकाशित होते हैं—वैसे ही नवीन बने रहते हैं।

अब ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है।

संसार विष वृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे।
काव्यामृतरसास्वादः संल्लापः सज्जनैः सहः॥

संसार है तो विषवृक्ष, परन्तु उसके दो फल अमृतोपम हैं। एक है काव्यों का रसास्वादन और दूसरा सज्जनों के साथ संलाप।

सज्जनों का सत्संग प्राप्त होना संदिग्ध है। बाहर से सभ्य दीखने वालों में भी अनेकों दिग्भ्रान्त, पथभ्रष्ट और चरित्रहीन होते हैं। यदा कदा ऐसे प्रकाशवान् व्यक्तित्व यदि हों भी तो इस व्यस्तता के युगमें इतना समय निकाल पाना और उन तक पहुँच पाना दोनों ही असम्भव जान पड़ते हैं। इन परिस्थितियों में व्यक्तित्व विकास और जीवन निर्माण का एक ही मार्ग दिखाई देता है, वह है सत्साहित्य का अध्ययन।

ज्ञान वृद्धि तथा विचार साधना के लिए पुस्तकों का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्ययन एक महत्वपूर्ण आधार है। मानवजाति द्वारा संचित समस्त ज्ञान पुस्तकों में संग्रहीत है, उसका लाभ अपनी सुविधानुसार कभी भी प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर को रात्रि के समय बुलाना हो तो फीस देकर बुलाया जा सकता है। टेलीफोन पर किसी स्वजन सम्बन्धी से किसी भी समय बातचीत की जा सकती है। महापुरुषों के विचारों का लाभ भी इसी तरह स्वाध्याय से किसी भी क्षण प्राप्त किया जा सकता है।

एक महापुरुष के अनुसार—"रात्रि बारह बजे आप टालस्टाय से मिलना चाहें, तुरन्त आलमारी खोलकर उनकी पुस्तकें निकाल लें। तुलसी से मिलना हो रामायण उठा लीजिये। भगवान कृष्ण का दर्शन करना हो, उनकी दिव्य वाणी का आनन्द लेना हो तो गीता उठा लीजिए, आपको साक्षात् भगवान् कृष्ण उपदेश देते जान पड़ेंगे। महात्मा ईसा, हजरत मुहम्मद, बुद्ध, महावीर, कन्फ्यूशस, सुकरात, स्वेटमार्डेन, जेम्स, एलेन, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि किसी भी सन्त-महात्मा, विचारक अथवा लेखक से आप १, २, ४, ६, १२ बजे—कभी भी मिल

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकते हैं।" किसी भी क्रम से किसी भी प्रश्न को लेकर मिल सकते हैं। महापुरुषों का सत्संग विचारों द्वारा ही होता है। शरीर से भले ही उनसे न मिल पायें तो भी उनकी प्रेरणा पुस्तकों द्वारा प्राप्त की जा सकती है और विचार-विमर्श भी किया जा सकता है। विचारों के माध्यम से सहस्त्रों वर्ष पूर्व के महापुरुषों का भी सान्निध्य प्राप्त किया जा सकता है।

डा० राधाकृष्ण ने कहा है—जो कुछ मनुष्य अपने अवकाश के समय करता है, वही उसके जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। कला, साहित्य, वैज्ञानिक अन्वेषण औद्योगिक, आविष्कार इत्यादि सब मनुष्य के एकान्त चिन्तन और कृत्य के ही परिणाम हैं।

संसार सागर के भीषण झझावातों में, उतार-चढ़ावों से पुस्तकें ही प्रकाश स्तम्भ की तरह सहायक होती हैं। प्रगतिशील जीवन का मार्गदशक और प्रेरणा-स्रोत साहित्य है। स्वाध्याय से ही श्रेष्ठ विचारणाओं और उत्कृष्ट भावनाओं की जागृति होती है। इस प्रकार आत्मिक उत्थानका एक माध्यम सत्साहित्य का अध्ययन भी है। अच्छे विचारों

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का उदय ईश्वर की भावनात्मक उपासना है। श्रेष्ठ पुस्तकों का पढ़ना और पढ़ाना किसी भी धर्मानुष्ठान से कम महत्व का नहीं है।

सत्साहित्य के अध्ययन से विचार ऊर्ध्वगामी बनते और भावनाओं में उत्कृष्टता का समावेश होता है। विचार-सेवा सबसे अच्छी सेवा है, ज्ञान-दान सबसे बड़ा दान है अतः समाज-सेवा तथा लोक-सेवा के इच्छुकों को पुण्य तथा परमार्थ की दृष्टि से पुस्तकालयों की स्थापना में योगदान देना हर प्रकार से औचित्यपूर्ण है।

अब प्रश्न यह उठता है कि पुस्तकालय में कैसा साहित्य रखा जाय ? कुछ पुस्तकें मनोरंजन के नाम पर अन्तःप्रकृतियों को अधोगामी बनाने में ही सहायक होती हैं। और कुछ व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने में। व्यक्ति के उत्थान और पतन दोनों का कारण विचार ही होते हैं। अतः पुस्तकों का चयन करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वह मनुष्य चरित्र को ऊँचा उठाने और नैतिक गुणों का अभिवर्धन करने में सहायक हो। जो साहित्य व्यक्ति और समाज में गति और शक्ति न पैदा कर सके, सद्भाव

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एवं सद्प्रवृत्तियाँ समुन्नत न कर सके, विचारणाओं और भावनाओं को उत्कर्ष की दिशा न दे सके वह साहित्य, साहित्य नहीं मात्र प्रवंचना ही होगी। उत्तम साहित्य वह है, जो मानवीय अन्तःकरण में सद्भावों को, मस्तिष्क संस्थान में सद्विचारों को जगा सके और मनुष्य को सद्कर्मों की ओर प्रेरित कर सके।

मिल्टन का कथन है—"अच्छी पुस्तकें महान् आत्माओं का जीवन रक्त है।" महान दार्शनिक लिटन ने कहा है—"ग्रन्थों में उनके सृजेताओं की आत्मा होती है, सद्ग्रन्थों का कभी नाश नहीं होता।" प्रसिद्ध विद्वान सिसरो का कथन सर्वथा उपयुक्त है—"ग्रन्थरहित घर आत्मारहित देह के समान है।" ज्ञान का अभाव एक तरह की मृत्यु है। ज्ञानरहित मनुष्य जीवन की लाश विवशतावश ढोता रहता है।

सत्साहित्य की उपेक्षा करने वालों को यह तथ्य भली भाँति समझाया और बताया जाना चाहिए कि पुस्तकों से सम्पर्क तोड़ देने के बाद पढ़ी हुई विद्या भी विस्मृत हो जाती है। कहीं भी और कभी भी यह देखा जा सकता

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है कि अध्ययन का क्रम बन्द कर देने के बाद पढ़ा हुआ ज्ञान विस्मृत हो जाने के तथ्य से अवगत होने के कारण प्रत्येक विचारशील नियमित अध्ययन का क्रम बनाए रखते हैं। वकील और डॉक्टर, राजनेता और पत्रकार, विद्वान और विचारक, चिंतक और दार्शनिक प्रतिदिन घण्टों स्वाध्याय करते हैं क्योंकि संसार में निरन्तर नये-नये विचार, नये-नये तथ्य, नया-नया ज्ञान उपलब्ध और विकसित हो रहा है। यदि साहित्य से सम्पर्क तोड़ दिया जाए तो पता ही नहीं चलता कि कहाँ क्या हो रहा है? कौन-सी पुरानी मान्यताएँ बदल रही हैं? आज की परिस्थितियों में कौन से समाधान किन समस्याओं के लिए व्यवहारिक है? कौन-सी नई प्रतिस्थापनाएँ हो रही हैं? आदि बातों का ज्ञान अध्ययन की नियमित क्रम व्यवस्था बनाये रहने से ही सम्भव होता है। जो साहित्य और समकालीन प्रतिपादनों घटनाओं की जानकारी रखते हैं, वे ही यह निश्चित कर पाते हैं कि इस बदलती परिस्थितियों में उनका क्या स्थान है और क्या कर्तव्य है? किसी भी व्यक्ति के लिए जागरुक नागरिक की भूमिका निभा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाना तभी सम्भव है जबकि उसे अपने आस-पास होते रहने वाले परिवर्तनों और चारों ओर होने वाली हलचलों का ज्ञान हो।

आज की परिस्थितियां तो और भी विषम हैं। समूची विश्व मानवता एक निर्णायक बिन्दु पर खड़ी है। विकास और विनाश की दोनों ही सम्भावनाएँ हैं। ये सम्भावनाएँ तो निरन्तर रहती हैं परन्तु वर्तमान समय में मनुष्य एक ऐसे कगार पर खड़ा है; जहां इस पार या उस पार वाली स्थिति है। अब यथास्थिति देर तक नहीं बनी रह सकती। इस निर्णायक दौर को उज्ज्वल सम्भावनाओं में परिणत करने के लिए ही महाकाल की प्रज्ञा प्रेरणा जागरुक आत्माओं को झकझोर रही है तथा उन्हें कुछ करने के लिए कचोट रही है। क्या किया जाना चाहिए? यह स्पष्ट है। मानवीय चेतना और चिन्तन में घुस पड़ी विकृतियों को नष्ट कर सुखद सत्प्रवृत्तियों की आस्था विकसित करना ही इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए सत्साहित्य से नियमित सम्पर्क एक सशक्त माध्यम है और यह माध्यम प्रत्येक जाग-

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रुक एवं विचारशील व्यक्ति तक ही नहीं, हर उस व्यक्ति तक पहुँचना व उसे अपनाने के लिए प्रेरित प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो थोड़ा भी पढ़ा-लिखा और शिक्षित है।

यह एक ध्रुवसत्य है कि सत्साहित्य एक विकसित मस्तिष्क होता है। इन्हें महापुरुषों के, महान विचारकों के मस्तिष्क का सुरक्षित कोष समझा जाना चाहिए। मिल्टन ने इसी तथ्य को इंगित करते हुए कहा है—'अच्छी पुस्तक एक महान आत्मा का जीवन रक्त है क्योंकि उसमें उनके जीवन के विचार और अनुभवों का सार निहित है।" व्यक्ति तो मर जाते हैं लेकिन ग्रन्थों में उनकी आत्मा बसती है, इसलिए ग्रन्थों को सजीव महापुरुष भी कहा जा सकता है। प्रसिद्ध विचारक मिल्टन ने इसी बात को इन शब्दों में व्यक्त किया है—"ग्रन्थों में आत्मा होती हैं, सद्ग्रन्थों का कभी नाश नही होता।"

महात्मा गांधी ने कहा है कि "अच्छी पुस्तकें पास होने पर हमें मित्रों की कमी नहीं खटकती। वरन मैं जितना अध्ययन करता हुँ, अच्छी पुस्तकें मुझे उपयोगी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मित्रों की तरह मिलती हैं।" मनुष्य का ज्ञान, संसार की ज्ञानराशि असंख्य अनेकताओं से भरी पड़ी है। मनुष्य का अपना स्वयं का मस्तिष्क ही इतने अधिक विचारों से भरा रहता है कि उसमें क्षण-क्षण नये विचारों की लहर उठती है। ये लहरें भिन्न-भिन्न और विलक्षण होती हैं। इन विभिन्नताओं के रहते अन्तर्जगत और बाह्य जीवन में अनेक संघर्ष उठते रहते हैं। इन संघर्षों से बचने अथवा विचार संग्रह से जीतने के लिए अच्छी पुस्तकें प्रभावशाली अस्त्र सिद्ध होती हैं। एक व्यक्ति का ज्ञान, अनुभव और चिन्तन का स्वरूप एकांगी ही हो सकता है लेकिन सद्-ग्रन्थों का अध्ययन अपनी समस्याओं, अन्तर्द्वन्द्वों और परिस्थितियों का समाधान स्वयं खोजने की क्षमता विक-सित करता है।

अस्तु प्रत्येक विचारशील और समझदार व्यक्ति को स्वयं अध्ययनशील तो होना ही चाहिए अपने निकटवर्ती जनों को भी अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण मिशन व्यक्ति परिवार समाज, धर्म और अध्यात्म से सम्बन्धित अगणित समस्याओं के व्यावहारिक समाधान के लिए पिछले लम्बे समय से वैसे सत्साहित्य के प्रकाशन में संलग्न है जो सस्ते एवं वैचारिक दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। वर्तमान में एक महत्वपूर्ण कड़ी और भी जुड़ गई है। भारत ८० प्रतिशत देहातों में फैला है। अधिकांश व्यक्ति गरीबी रेखा से भी निम्न स्तर का जीवन यापन करते है। यह ध्यान रखते हुए २५ पैसे मूल्य का युग साहित्य प्रत्येक विषय पर सर्वसुलभ कराया गया है जो सही अर्थों में व्यावहारिक सत्संग की भूमिका सम्पन्न करेंगे।

माहेश्वरी प्रिण्टर्स डी–५ इन्ड्रस्ट्रियल एरिया, मथुरा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत्साहित्य ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं जो संसार सागर के भीषण झंझावातों-उतार-चढ़ावों में मनुष्य का मार्ग-दर्शन करते और भटकाव से बचाते है ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि - मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Printed by Laxmi Printing Press, Mathura